



अनुक्रमणिका

ज्ञान और सभ्यता का मार्ग

इस्लाम और ज्ञान

सभ्यता का मार्ग

सभ्यता के मार्ग के तत्व

खुरआन और हदीस का चमत्कार

ज्ञान और सभ्यता का मार्ग

ज्ञान और सभ्यता का मार्ग

इस्लाम और ज्ञान

निस्संदेह प्रसन्नता के मार्ग का ज्ञान और सभ्यता के राहों से गुजरना आवश्यक है। किसी भी स्थिति में प्रसन्नता के मार्ग को अज्ञान या मंदता की राहों से गुजरना संभव नहीं है। इस्लाम धर्म के समान कोई ऐसा धर्म नहीं है, जो ज्ञानी लोगों का गौरव बढ़ाया हो। उनको सम्मानता दी हो। ज्ञान प्राप्त करने और बुद्धि का उपयोग करने पर प्रोत्साहित किया हो। सोच-विचार करने की ओर बुलाया हो। इस्लाम वह धर्म है जो ईश्वर के रसूल मुहम्मद लेकर आये। इस ने एक बड़ी सभ्यता बनायी, जो पूर्व, पश्चिम में फैले गयी। इसी कारण मुहम्मद का प्रवेश होना वास्तव में ऐसे समूह के भीतर ज्ञानिक क्रांति है, जो समूह न ज्ञान से प्रेरणा रखता था, और न इसका आदि था। इस्लाम का प्रवेश हुआ, ताकि ज्ञान का प्रारंभ हो और संसार को देवत्व मार्गदर्शन के प्रकाश से रोशन कर दें। अब क्या वे अज्ञान का फैसला चाहते हैं। तो विश्वास करनेवाले लोगों के लिये अल्लाह से अच्छा फैसला करनेवाला कौन हो सकता है। (अल-माइदा, 50)

इस्लाम धर्म में अज्ञान, संदेह, भ्रम और शक के लिए कोई स्थान नहीं है। परन्तु अनपढ़ नबी (मुहम्मद) पर अवतरित होने वाली पहली वाणी यह थी। पढ़ो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पैदा किया मनुष्य को चिपकनेवाली चीज़ से। पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही उदार और श्रेष्ठ है, जिसने कलम के द्वारा शिक्षा दी, मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था। (अल-अलक, 1-5)

यह बात खुली थी कि यह पहली वाणी ही इस धर्म को समझने की, संसार को समझने की, बल्कि उस परलोक को समझने की चाबी भी है, जिसकी ओर भविष्य में मानव को लौटना है। बल्कि यह नोट किया गया, खुरआन केवल अवतरित होने

के प्रारंभ में ही ज्ञान के मुद्दे को महत्व नहीं दिया है। बल्कि मानव की सृष्टि के समय से ही महत्व दिया है। जैसा कि खुरआन ने अपने वाक्य में इसका विवरण किया है। ईश्वर ने आदम को पैदा किया। उनको धरती पर अपना उत्तराधिकारी बनाया। एंजीलों को आदम के सामने झुकने का आदेश दिया। आदम को सम्मान, गौरव और महत्व दिया। फिर हमें इस सम्मान का कारण बताया। वह कारण ज्ञान है। ईश्वर इसी के प्रति यह विवरण करता है। और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में (मनुष्य को) खलीफ़ा (सत्ताधारी) बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहा, क्या उसमें उसको रखेगा जो उसमें बिगाड़ पैदा करे और रक्तपात करे, और हम तेरा गुणगान करते और तुझे पवित्र कहते हैं। उसने कहा, मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। उसने (अल्लाह ने) आदम को सारे नाम सिखाये, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा, अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। वे

बोले, महिमावान है तू। तूने जो कुछ हमें बताया उसके सिवा हमें कोई ज्ञान नहीं। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है। उसने (अल्लाह ने) कहा, ऐ आदम। उन्हें उन लोगों के नाम बताओ। फिर जब उसने उन्हें उनके नाम बता दिए तो (अल्लाह ने) कहा, क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आकाशों और धरती की छिपी बातों को जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो। (अल-बकरा, 30-33)

इस्लामिकि पुकार सुनो

निस्संदेह इस्लाम (जो ज्ञान का धर्म है) ज्ञान प्राप्त करने और उसका उपयोग करने की ओर अपने मानने वालों को बुलाता है, इस बात में किसी को आश्चर्य होने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि कि खुरान की पहली आयत ही ईश्वर का यह संदेश देती है, "पढ़ो अपने रब के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है"।

राबर्ट बेर जोसफ़

फ़ेंच विश्वविद्यालय के दर्शन प्रोफेसर



इस्लाम धर्म में ज्ञान की कीमत और महत्व का संकेत इस बात से भी मिलता है कि केवल खुरआन के प्रारंभ में ही ज्ञान को महत्व से संबंधित यह वाणी नहीं है, जिसमें ईश्वर ने कहा।

पढ़ो ।

बल्कि शाश्वत संविधान की यह स्थिर विधि है। खुरआन की सूरतों में से एक भी सारा ज्ञान संबंधित बातों से खाली नहीं है, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से। ईश्वर ने सबसे अधिक महत्व विषय, यानी ईश्वर के एकीकरण के सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त करने का अपनी वाणी में आदेश दिया है। अतः जान रखो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। और अपने गुनाहों के लिए क्षमा-याचना करो, और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी। अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत को भी जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी। (मुहम्मद, 19)

ईश्वर की यह वाणी ज्ञान और ज्ञानी कि सर्वश्रेष्ठता के महत्व पर आधारित है। बल्कि ईश्वर ने ज्ञानी और अज्ञानी के बीच बराबरी से इन्कार किया। कहो, क्या वे लोग जो जानते हैं और वे लोग जो नहीं जानते दोनों समान होंगे। शिक्षा तो बुद्धि और समझवाले ही ग्रहण करते हैं। (अल-जुमर, 9)

बल्कि ईश्वर संसार में ज्ञानी लोगों को उच्चता प्रधान करता है, और परलोक में पुण्य भी। ईश्वर ने कहा। तुममें से जो लोग ईमान लोये हैं और जिन्हे ज्ञान प्रदान किया गया है, अल्लाह उनके दरजों को उच्चता प्रदान करेगा। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी खबर रखता है। (अल-मुजादला, 11)



मस्जिद विश्वविद्यालय है

पहले (और आज भी कुछ) मस्जिदें इस्लाम की विश्वविद्यालय हैं। ज्ञान की इच्छा रखने वाले छात्रों से मस्जिदें भर जाती थी। ये छात्र धर्म, नियम, दर्शन, फार्मसी और गणित का ज्ञान के प्रती अध्यापकों के लेक्चर्स सुन्ने के लिये आया करते थे। स्वयं ज्ञानी लोग भी विश्व के हर ओर से आते थे जो अरबी भाषा बोलने वाले हुआ करते थे, यह लोग हर छात्र को आमंत्रित करते थे, चाहे वे किसी भी देश के वासी हो ।

स्टानली लीन पॉल

ब्रिटीश ज्ञानी

इसके अतिरिक्त पवित्र खुरआन में ज्ञान अर्जित करने से अधिक किसी और विषय पर प्रोत्साहित नहीं किया गया। ईश्वर ने कहा। और कहो, मेरे रब, मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर। (ता-हा, 114)

यह कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है कि जब रसूल ने यह कहा: जो व्यक्ति ज्ञान अर्जित करने के लिए किसी मार्ग पर चलता है, तो ईश्वर उसके लिए स्वर्ग का मार्ग सरल बना देता है। शिक्षक से आनंदित होकर फरिश्ते अपने पंख बिछा देते हैं। शिक्षक के लिए धरती और आकाश में स्थिर हर चीज़, यहाँ तक कि समुद्र कि मछिलियाँ भी क्षमा माँगती है। ज्ञानी पुरुष की उच्चता साधु-सन्त पर चन्द्रमा की सारे ग्रह पर उच्चता के समान है। निस्संदेह ज्ञानी लोग रसूलों के वारिस हैं। रसूल धन दौलत का किसी को वारिस नहीं बनाते। बल्कि वे ज्ञान का वारिस बनाते हैं। जिसने ज्ञान प्राप्त करलिया उसने अपना महत्व भाग हासिल करलिया। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है।) इसी कारण रसूल के प्रवेश होने के बाद मस्जिदें ज्ञान और ज्ञानी लोगों के लिए सुरक्षित स्थान बन गयीं।

खुरआन और उसका वैज्ञानिक चमत्कार

खुरआन प्राकृतिक ज्ञान के प्रती खुले और साफ संदेश पर आधारित है, इस बात का अध्यापक यूसुफ मरवा ने खुरआन में प्राकृतिक ज्ञान नामक पुस्तक में वर्णन किया है। इनकी पूरी गिंती 774 है, जिसका विस्तर निम्न लिखा जा रहा है: गणित 61, फिज़िक्स 264 परमाणु विज्ञान 5, रसायन विज्ञान 29, सापेक्ष विज्ञान 62, खगोल विज्ञान 100, मौसम विभाग 20, जल ज्ञान 14, अंतरिक्ष विज्ञान 11, पशु विज्ञान 12, कृषि विज्ञान 21, जीव विज्ञान 36, भूगोल विज्ञान 73, एंथोलॉजी 10, भूविज्ञान 20, ब्रह्माण्ड और उस्की घटनाओं के इतीहास का ज्ञान 36 ।

मैरीस बोके

फ्रेंच डाक्टर और वैज्ञानिक



सबसे बड़ी आश्चर्य बात यह है कि ज्ञान का शब्द अपने अलग-अलग प्रकार में खुरआन के भीतर 779 बार आया है। यानी लगभग खुरआन के हर सूरे में 7 बार आया है। यह तो केवल ज्ञान शब्द से संबंधित बात है। लेकिन बहुत से ऐसे शब्द हैं जो ज्ञान की ओर संकेत करते हैं। जैसे: यकीन, मार्गदर्शन, बुद्धि, सोच, विचार, तत्वदर्शिता, समझ, प्रमाण, तर्क, निशानी, दलील, इनके अतिरिक्त और भी शब्द हैं जो ज्ञान की ओर प्रेरणा पैदा करते हैं। जहाँ तक रसूल कि वाणी (हदीस) की बात है, तो इस पुस्तक में उसकी गणना करना कठिन है। क्योंकि हदीसों की संख्या बहुत है। पवित्र खुरआन भौतिक, रसायन, प्रकृति या गणित की पुस्तक नहीं है। बल्कि वह मार्गदर्शन की पुस्तक है। तथापि खुरआन में आधुनिक ज्ञान से प्राप्त होनेवाली किसी भी बात के विपरीत कभी कोई चीज़ नहीं रही।

इस्लामिक शासन में इन सारी बातों का अधिक प्रभाव रहा। इस प्रकार कि ज्ञान की अलग-अलग क्षेत्रों में ऐसी वैज्ञानिक गतिविधियाँ पैदा हुईं, जिसकी इतिहास में कोई मिसाल नहीं मिलती। इन गतिविधियों से मुस्लिम वैज्ञानिकों द्वारा महान सभ्यता की प्रगती हुई, और मानवीय ज्ञान को वह बेमिसाल कोष प्रधान किया, जिसके एहसान तले सारा संसार रहेगा। मेक्स मैर होफ कहता है: पश्चिम में रसायन के विकास का कारण प्रत्यक्ष रूप से “जाबिर बिन हय्यान” को माना जा सकता है। इसका सब से बड़ा प्रमाण यह है कि जाबिर ने जिन शब्दावलियों का आविष्कार किया वह आज तक पश्चिम की अन्य भाषाओं में उपयुक्त है।

अल्डो मेली का कहना है: जब हम गणित और खगोल की ओर देखें, तो प्रारंभ से हमें पूर्वकाल के ज्ञानी मिलते हैं। इनमें से अधिकतर प्रसिद्ध ज्ञानी अब्दुल्ला, मुहम्मद बिन मूसा, खवारिज़्मी हैं। (1. बीज गणित और भारतीय अंक प्रणाली का संस्थापक। गणित, खगोल और भूगोल के अधिकतर अनुसंधान लेखक) खवारिज़्मी बड़े बड़े गणितज्ञों में से प्रथम है। उसकी पुस्तकें 16 वी

शताब्दी तक पश्चिम कि विश्वविद्यालयों में पढायी जाती रही।

जगरेडहॉका ने जहरावी कि पुस्तक अतसरीफ लिमन आजज़। अनित तालीफ के सर्जरी से संबंधित विशेष भाग के बारे में यह कहा: इस पुस्तक के तीसरे भाग ने पश्चिम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। क्योंकि पश्चिम में सर्जरी के नियम कि स्थापना इसी पुस्तक ने किया है। सर्जरी से संबंधित भाग के कारण पुस्तक को उँचा स्थान मिला। सर्जरी स्वयं एक ज्ञान और अपने नियमों से शारीरिक विच्छेद (एनाटमी) पर आधारित हो गया। पाँच शताब्दियों तक पश्चिमी विकास में जहरावी की इस पुस्तक का अधिक प्रभाव रहा। क्योंकि यह पश्चिम की विश्व विद्यालयों में पढायी जाती थी। इसी प्रकार पश्चिम के सर्जन इसी को अपने शिक्षा का मार्ग बनाते थे। आज तक भी मुस्लिम वैज्ञानिक सारी मानवता के लिए कई आविष्कार कर रहे हैं। अहमद जुवैल अपनी पुस्तक असरूल इलम में कहता है: मेरी कोशिश परमाणु के बीच एक स्थान रखती है जहाँ पर आंशिक के बीच मिलाप और जुदाई है। जिस प्रकार कि समय क्षण के भीतर शामिल होता है फिर क्षण एक महत्वपूर्ण समय बन जाता है।

कोई आश्चर्य कि बात नहीं की यह ज्ञान, मार्गदर्शन और प्रकाश, जो मुहम्मद लेकर आये, वह मानवता को गंदी नालियों से मुक्ति दिलायी है। और सारे इतिहास में ज्ञान, सभ्यता और विकास द्वारा उच्चता प्रधान की है। इस्लाम ज्ञान पर आधारित व्यवस्थित मार्ग लेकर आया है। उदाहरण के तौर पर इस्लाम ने सोच विचार के बिना अनुसरण करने से चेतावनी दी। ईश्वर मुश्रिकों (साज़ीदारों) के प्रति यह कहता है।



संप्रदा से लगाओ

आधुनिकता के इतिहास में संप्रदा से अधिक लगाव का इस से महान आन्दोलन कभी नहीं हुआ, जिस प्रकार से कि इस्लामी विश्व के चारों ओर देखा गया। हर मुस्लिम चाहे राजा हो या मज़दूर सब के भीतर ऐसा लगता है कि अचानक ज्ञान के प्रती लगाव और यात्र की तड़प पैदा होगई। यही वह सबसे उच्च विषय है जिसको इस्लाम ने प्रस्तुत किया। आधुनिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये जिस प्रकार से वर्तमान युग में पश्चिमी विज्ञानों से विश्वविद्यालय भरे हैं उसी प्रकार से छात्र बुगदाद और इस के सिवा दूसरे केन्द्र की ओर रुक करते थे, बल्की वे वर्तमान छात्रों से भी अधिक लगाव रखते थे।

स्टानली लीन पॉल

ब्रिटीष प्राच्ये विद्या विशारद



गोस्ताव लोबुन
फ्रेंच इतीहासकार

ज्ञान की सभ्यता

जब जब हम अरब की सभ्यता, ज्ञानिक पुस्तक, अविष्कार और उनकी कलाओं में विचार करते हैं, तो हमारे सामने नये रहस्य और व्यापक संभावनाएँ स्पष्ट होती हैं। फिर हम तुरन्त ही यह स्वीकार कर लेते हैं कि पूर्व काल के ज्ञान को मध्ययुगीन तक पहुँचाने में अरब के लोग ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाये हैं। पाँच सदियों तक पश्चिम की विश्वविद्यालयों में अरब की लिखित पुस्तकों से हट कर कोई और उनके पास ज्ञान का स्रोत नहीं था। उन ही लोगों ने भौतिक, मान्सिक और चारित्रिक रूप से पश्चिम को उच्च सभ्यतावान बनाया। इतीहास में कोई ऐसी खौम नहीं है, जो कम ही समय में अरब के प्रकार वैज्ञानिक विकास किया हो, और कोई खौम कलात्मक आविष्कारों में अरब से आगे नहीं बढ़ी है।

और जब उनसे कहा जाता है, अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसका अनुसरण करो तो कहते हैं, नहीं, बल्कि हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या उस दशा में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी बुद्धि से काम न लेते रहे हों और न सीधे मार्ग पर रहे हों। (अल-बकरा, 170)

इस्लाम ज्ञान मार्ग के बिना सोंच विचार का अनुसरण करने से रोका है। ईश्वर ने कहा। वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं और वे केवल अटकल ही दौड़ाते हैं। (अल-अनआम, 116)

इसी प्रकार इस्लाम ज्ञान, बुद्धि, सोंच विचार और तर्क के विपरीत हवस से रोकता है। ईश्वर ने कहा।

परन्तु अधिकतर लोग तो ज्ञान के बिना केवल अपनी इच्छाओं (ग़लत विचारों) के द्वारा पथभ्रष्ट करते रहते हैं। (अल-अनआम, 119)

इस्लाम गुनाह और कपट से रोका, जो न्याय से दूर रखता है। ईश्वर ने कहा। और ऐसा न हो कि किसी गिरोह कि शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोड़ दो। इन्साफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी खबर है। (अल-माइदा, 8)

इस्लाम वैज्ञानिक निष्पक्षता को भी चुनौती दी है। ईश्वर ने युद्ध के बारे में कहा। वे लोग जो यहूदी बन गए, वे शब्दों को उनके स्थानों से दूसरी ओर फेर देते हैं और कहते हैं, समिअना व असैना (हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं), (अल-निसा, 46)

अन्याय और युद्ध न करने के प्रति ईश्वर ने यह कहा।

चमत्कारिक खुरआन

मैंने ज्ञान और प्राकृति से संबंधित खुरआन की सारी आयतों में विचार किया है, तो मैंने इन सारी आयतों पर आधुनिक ज्ञान को पूरा पूरा प्रयोजित पाया। इसलिए कि मेरा विश्वास है कि एक हजार वर्ष पहले, (जबकि न कोई मानवीय आचार्य था और न कोई शिक्षक) मुहम्मद एक खुला सत्य लेकर आये। अगर किसी भी ज्ञान या कला का विशेषज्ञ अपने प्राप्त किये हुए सारे ज्ञान का खुरआन की आयतों से तुलना करेगा, जिस प्रकार से मैंने की है, तो वह निस्संदेह खुरआन पर विश्वास कर लेगा, लेकिन निजी उद्देश्यों से उस विशेषज्ञ को दूर होने की आवश्यकता है।



रेन्हे गीनो
फ्रेंच दर्शनिक

इल्ज़ाम तो केवल उनपर आता है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और धरती मे नाहक ज़्यादाती करते हैं। (अल-शूरा, 42)

लोगों के बीच न्याय के साथ ज्ञान के प्रति अमानतदारी का आदेश दिया। ईश्वर ने कहा। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो। (अल-निसा, 58)

इस्लाम न्याय, इन्साफ़ करने और सच्ची गवाही देने का आदेश देता है। ऐ ईमान लानेवालों। अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ जमे रहो, चाहे वह स्वयं तुम्हारे अपने विरुद्ध ही क्यों न हो। (अल-निसा, 135)

प्रमाण और सबूत के साथ खोज करने की महत्वता के प्रति ईश्वर ने यह कहा। कहो, लाओ अपना प्रमाण यदि तुम सच्चे हो। (अल-नम्ल, 64)

इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी चीज़ें हैं जो ज्ञान और सभ्यता के मार्ग को व्यवस्थित बनाते हैं।



सभ्यता का मार्ग

कोई भी समूह या गिरोह, विकसित हो या अवतनि हो, स्वयं के लिए एक संस्कृति रखता है, जिससे वह संबंधित रहता है, और इस संस्कृति, द्वारा मनुष्य के भीतर विशिष्ट चरित्र पैदा होता है। संस्कृति जीव की एक विधि है। जीवन और संसार कि एक स्थिति है। सामाजिक और चारित्रिक प्रणाली है, जो जीवन के अभिव्यक्तियों और हर कड़ी पर प्रभावित होता है। गतिविधियों में प्रकट होता है। समाज को अपनी एक पहचान देता है। और संस्कृति कि एकता को सुरक्षित रखता है। जहाँ तक सभ्यता कि बात है, तो यह समूह के सांस्कृतिक स्थिर का जायद गुण है। जो विकास, मात्रात्मक और गुणात्मक श्रेष्ठता और सांसारिक आविष्कार का कारण होता है। इतिहास में प्रभाव का एक उल्लेखनीय स्तर (डिग्री) होता है। संसार कि घटनाएँ और उसके निर्देशन में प्रभावित है। यह प्रभाव स्थान और समय के अनुसार कभी-कभी विस्तृत गठन का कारण होते हैं। इसी तरह हर सभ्यता, प्रकृति, समाज, राजनैतिक, धर्म, संस्कार, ज्ञान और चरित्र के बीच अनोखा गठन होता है। इन सब कारणों को हम एक ही स्थान में सीमित पाते हैं। और वह स्थान किसी भी समूह कि विशेषताओं के साथ उसकी सभ्यता है।

निश्चय इस्लाम पहले इमान लानेवाले गिरोह के व्यक्तित्व को उनके असहिष्णुता और मंदता से उच्च नैतिकता और अच्छे नियमों से बदल दिया। जो बहुत ही कम वर्षों में विकास और सभ्यता में जॉन डाल दी। इन कम वर्षों में उन्होंने दुनिया में विजय प्राप्त कर ली। उस समय के बहुत से गिरोह ने इस सभ्यता को स्वीकार किया। क्योंकि मुहम्मद द्वारा शुभ सूचना दिये हुए धर्म में सरलता, न्याय, भाई चारगी समानता थी। इस्लामी सभ्यता उस

समय प्रवेश हुई, जबकि लोग जुल्म और बंदगी पर आधारित पुरानी विधि से निराश हो गये, वे ऐसी नयी विधि की इच्छा करने लगे, जिसमें वे स्वयं के लिए

सम्मान और मानवता पाते हैं। जबकि पहले वे अत्याचार और कठोर राजाओं के अन्याय से पीड़ित थे। इस्लाम ने उन्हें सुवर्ण अवकाश प्रधान किया। इसलिए कि इस्लाम ने उनकी बहुत सी स्थितियों को सुधारा। वे इस्लाम में वही सम्मान जनित जीवन देखते थे जिसकी वे इच्छा किया करते थे। साथ-साथ उनसे अन्याय, अज्ञान और मंदता को दूर किया।

इस्लामी सभ्यता ने मानव कि दृष्टि को सम्मान दिया। किसी भी समय जात रंग या भाषा के आधार पर मानवता के बीच कभी कोई अंतर नहीं रखा। बल्कि सारी मानवता ने एक ही व्यवहार और एक ही समान के अधिकार इसमें पायी। इस्लामिक सभ्यता ने मानवीय समूह के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इस प्रकार कि रिशते-नाते के आधार पर चलनेवाली परंपराओं को सिद्धांत और विचार में संयुक्त समूह की विधि से बदल दिया। जिसका सामाजिक संबन्ध भाई-चारगी और सम्मानता पर आधारित है।

इस्लाम कि दृष्टि में सभ्यता का सबसे पहला लक्ष्य सुख, शांति की उपलब्धी। सर्वश्रेष्ठ समाज की स्थापना। मानवता को अच्छाइयों से प्रसन्न करना। और बुराई के हर कारण का विरोध करना है। इस प्रकार कि विभिन्न आधुनिक साधनों द्वारा सभ्यता की उन्नति स्वयं कोई लक्ष्य नहीं है। बल्कि उच्च सभ्यता का लक्ष्य मान्सिक प्रसन्नता और मानव के लिए सम्मानता के द्वारा भावात्मक सुख की उपलब्धी है। साथ साथ समाज और राष्ट्र के लिए विकास और शांति का प्रधान है। जिसका कारण हर भलाई और लाभदायक विषयों तक पहुँचना, नष्टदायक और बुरी बातों से दूर रहना है।

उस आधुनिक सभ्यता के विपरीत जो दुख और व्याकुल, मानवता को भौतिक पथभ्रष्ट में डालने, मानवीय उच्च आचार जैसे धर्म और नैतिकता से दूर रखने और लोगों का ऐसे मानवीय क्षेत्रों में परिवर्तन करना है, जिस में आत्मा नहीं और जिसमें बलवान निर्बल पर अत्याचार करता है।



घमण्ड के संकेत

वर्तमान काल में जब कि अरब के मुस्लिम्स और क्रिस्टियन्स का पश्चिमी वासियों के साथ गहरा संबंध होता जा रहा है, इस जैसे समय में इस बात कि आवश्यकता है कि पश्चिम पर इस्लामिक प्रभाव के प्रती एक रिपोर्ट तैयार की जाये। मध्ययुग में यह बात नोट की गई कि पश्चिम के कुछ ईसाई लेखक इस्लाम की छवी को कई पक्षों से विरूपण किया है, मगर पिछली सदी में वैज्ञानिकों के प्रयास के द्वारा पश्चिमी लोगों के दिमाग में इस्लाम की छवी कुछ अच्छी होने लगी। अरब और मुसलमानों के साथ अच्छे संबन्ध होने के कारण मुसलमानों की ओर से हम पर होने वाले एहसान को हमें मानना चाहीये। अगर हम इस एहसान को इनकार करने का प्रयास करें तो यह खुले घमण्ड का संकेत है।

मुंदोबु मेरी वॉट

ब्रिटीष प्राचयं विद्या विशारद



संसार की आत्मा हत्या

पूर्व काल से अधिक आज कल पश्चिम को इस्लाम की आवश्यकता है, ताकि जीवन को एक लक्ष्य और इतीहास को महत्व मिले, यहाँ तक कि ज्ञान को ईमान से अलग रखने के प्रति पश्चिम के विचार बदल जाये। निश्चय इस्लाम ज्ञान और ईमान के बीच कोई रुकावट नहीं रखता है, इसके विपरीत इस्लाम इन दोनों को संपूर्ण एकाई समझता है, जो एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। इसी प्रकार से इस्लाम में यह शक्ति है कि वह उन पश्चिमी समुदायों में जीवन कि किरण फिर से ज़िंदा करदे, जो संसार को आत्महत्या की ओर लेजाने वाले व्यक्तिगत विकास से प्रभावित है।

मरमाडु कन्कसोल

ब्रिटीष आलोचक



वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

इस्लाम ने 8 सदियों के भीतर महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, इसी कारण इस्लाम को केवल सभ्यता का स्थानांतरण करने वाला, या पश्चिमी सभ्यता को पूर्ण रूप से पश्चिमी ही समझना गलत है, क्योंकि कि पश्चिम को उन महत्वपूर्ण नियमों के द्वारा सहायता करने में इस्लाम का बहुत बड़ा रोल रहा है, जिनके उपयोग से पश्चिम ने यह सारी उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

प्रिन्स चार्लेस

ब्रिटीष युवराज

सभ्यता के मार्ग के तत्व

इस्लामिक सभ्यता के कुछ विशेष और मुख्य तत्व हैं, जिसके द्वारा सभ्यता अपने लक्ष्य, नियम और सिद्धांत में अन्य सभ्यताओं के मुकाबले संपूर्ण हो जाती है। हालांकि इस सभ्यता और अन्य सभ्यताओं के बीच कुछ बातें मिलीझुली भी हो सकती हैं।

इस्लामिक सभ्यता का सिद्धांत यूनानि सभ्यता के समान बुद्धि कि प्रशंसा नहीं है। न रूमानी सभ्यता के प्रकार प्रभाव, शासन और शक्ति कि प्रशंसा है। न पारसियों के समान भौतिक रुचियों, सैन्य बल और राजनीतिक प्रभाव है। न भारतीय और चीनियों के समान आध्यात्मिक शक्ति का अधिक ध्यान है। न साधु सन्तों का प्रभाव है, जो मिथक और किवंदतियों का मिश्रण है। इसी चीज़ ने पश्चिम को मध्ययुगीन के अंधेरों में रखा। न भौतिक ज्ञान, ब्रह्माण्ड के खनिज पदार्थ से लाभ उठाने, और सरकश भौतिकवाद का नाम इस्लामिक सभ्यता है। जिस प्रकार कि यूनान और रोम से मिलनेवाली आधुनिक सभ्यता की विधि है। बल्कि इस्लामिक सभ्यता एकीकरण के सिद्धांत, सौंच-विचार, ज्ञान, कार्य आत्मा, विकास, मानव और बुद्धि को सम्मान देने पर आधारित है। यानी उन सारे विषयों

पर जो मानवीय जीवन के भाग है। इस प्रकार से इस्लामिक सभ्यता स्वयं एक संपूर्ण संविधान है, जो अन्य सभ्यताओं से बिल्कुल भिन्न है। इस्लामिक सभ्यता अपने भीतर युद्ध की शक्ति, न्याय विरोधी के साथ नमी, भलाई की इच्छा और सारे संसार के लिए ज्ञान को फैलाने के कारण अन्य सभ्यताओं पर विशिष्टता रखती है। इसी कारण फिर से अपने भीतर स्थिर तत्व के अनुसार इस्लामी सभ्यता को मानवता पर शासन करने का अधिकार मिलता है।

इस्लामिक सभ्यता कई तत्व के कारण सर्वश्रेष्ठ है। जिनमें से कुछ निम्न लिखे जा रहे हैं।

1. ईमान (विश्वास) और एकीकरण का सिद्धांत

ईमान (विश्वास) प्रसन्नता के मार्ग का सारा ज्ञान प्राप्त करने और सभ्यता का सृजन करने का सबसे बड़ा कारण है। हर वह सभ्यता जो ईश्वर पर विश्वास और एकीकरण के सिद्धांत पर आधारित नहीं है, वह अपने अंदर नियमों में टकराव रखता है। जो एक दूसरे का विरोध करते हैं। क्योंकि इन सभ्यताओं में नाम बदल बदल कर ईश्वर के अलावा कई अन्य प्रभु बनानिये गये हैं। यही वह कारण है जो मानवीय जीवन का बिगाड़ और अप्रसन्नता की ओर ले जाती है। ईश्वर ने कहा। यदि इन दोनों (आकाश और धरती) में अल्लाह के सिवा दूसरे इष्ट-पूज्य भी होते तो दोनों की व्यवस्था बिगाड़ जाती। अतः महान और उच्च है अल्लाह, राजासन का स्वामी, उन बातों से जो ये बयान करते हैं। (अल-अंबिया, 22)

मध्यलोक

अगर मुसा इबने मसीर को पश्चिम का शासन दिया जाये, तो वह पूरे पश्चिम को मुसलमान बनादे। सारी सभ्यतावान खोमों को एक ही धार्मिक इकाई में डाल दे, और इस बात की संभावना है कि पश्चिम को मध्यलोक के रूल से मुक्ती दिलादे, जिसको स्पेन ने अरब के एहसान द्वारा ज्ञान प्राप्त किया है।

जोस्ताव लोबुन

फ्रेंच इतीहासकार





अर्नाल्ड ट्वेम्बी
ब्रिटीश इतिहासकार

पराजित का अपने विजेता को बन्धी बनाना

प्राजित इस्लाम ने ईसाइयों के विरुद्ध धार्मिक युद्ध में अपने विजेता को बन्धी बना लिया। ईसाई संसार के जीवन में सभ्यता की कलायें डाल दी। निश्चय पश्चिमी जीवन में इस्पात भर गया था, और मध्य युग में ईसाई संसार के भीतर कुछ मानवीय गतिविधियों के छात्रों जैसे इंजीनियरिंग में इस्लामिक प्रभाव सार्वजनिक था। सिसीली और इस्पेन में प्राचीन अरबिक साम्राज्य से अधिक पश्चिम आधुनिक शासन प्रभावित था।

ईशवर ने कहा अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई अन्य खुदा है। ऐसा होता तो प्रत्येक खुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देता। महान और उच्च है अल्लाह उन बातों से जो वे बयान करते हैं। (अल-मोमिनुन, 91)

ईशवर ने कहा। कह दो, यदि उसके साथ अन्य भी पूज्य-प्रभु होते, जैसा कि ये कहते हैं, तब तो वे सिंहासनवाले (के पद) तक पहुँचने का कोई मार्ग अवश्य तलाश करते। (अल-इस्रा, 42)

इसकी प्रतिचर्या अधिकतर सभ्यताओं को मिली है और मिलती रहेगी। वे अपने उद्देश्य से हट जायेंगे, अपनी दिशाओं से फिर जायेंगे। फिर मानवता के लिए भलाई कि इच्छा रखते हुए भी बुराई का कारण बनेंगे। ईशवर ने कहा। उन्होंने अल्लाह से हटकर अपने धर्म ज्ञाताओं और संसार-त्यागी संतों को अपने रब बना लिए और तदधिक मरयम के बेटे ईसा को (अल्लाह का बेटा भी)- हालाँकि उन्हें इसके सिवा और कोई आदेश नहीं दिया गया था कि वे अकेले इष्ट-पूज्य की बन्दगी करें, जिसके सिवा कोई और पूज्य नहीं। उसकी महिमा के प्रतिकूल है वह शिर्क जो ये लोग करते हैं। (अल-तौबा, 31)

2. विश्व व्याप्त

इस्लाम विश्व व्याप्त धर्म है, जो हर समय और स्थान, हर भाषा और जात, हर रंग और वंशज की सुधार के लिये आया है। ईशवर ने कहा। हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (सबा, 28)

ईशवर ने कहा। बड़ी बरकतवाला है वह जिसने यह फुरकान अपने बन्दे पर अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिये सावधान करनेवाला हो। (अल-फुरकान, 1)

ईशवर ने कहा। कहो, ऐ लोगों। मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आकाशों और धरती के राज्य का स्वामी है। (अल-आराफ़, 158)

ईशवर ने कहा। हमने तुम्हें सारे संसार के लिये सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

इस्लाम ऐसा स्थिर सिद्धांत लेकर आया है स्थितियों के परिवर्तन से नहीं बदलता, और न्याय, सत्य, भलाई पर आधारित ऐसे नियम (शरिअत) लेकर आया है, जो हर समय और स्थान में मानवीय प्रकृति के मुनासिब है। इसका कारण केवल यह है कि यह नियम उस ईशवर द्वारा है, जो सारे जीव के लाभ और सुधार का ज्ञान रखता है। ईशवर ने कहा। क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया। वह सूक्ष्मदर्शी, खबर रखनेवाला है। (अल-मुल्क, 14)

इसी प्रकार इस्लाम धर्म लोगों कि किसी विशेष जात, रंग या गिरोह के लिए नहीं है। वह गोरे, काले, लाल, पीले सब के लिए है। वह पूर्वकाल, वर्तमानकाल और भविष्य के लोगों के लिए है। कोई भी अनुसंधान वैज्ञानिक, चाहे वह कितना भी महान हो, इस्लाम के रसूल मुहम्मद के लाये हुए धर्म में क्षेत्रिय चरित्र, या सांप्रादायिक और जातिवाद रंग नहीं पाता है। यह खुला सबूत है कि मुहम्मद का लाया हुआ संदेश विश्व व्याप्त है, जो किसी विशेष गिरोह या समूह का पक्षपात नहीं करता क्योंकि इस्लाम के उपदेश, संस्कार और आचार सब किसी भी काल के हर मानव के लिए उपयुक्त है।



जीवन में प्रवेश होना

निश्चय इस्लाम मानवता के लिये सर्वश्रेष्ठ धर्म है। इस्लाम मुस्लिम के जीवन के हर पक्ष में प्रवेश करता है, बल्कि मुस्लिम की हर गतिविधि में इस्लाम ही का निर्णय होता है। इस्लाम के सिवा कोई ऐसा दूसरा धर्म नहीं है, जो इस आधुनिक काल में लोगों की सारी समस्याओं के समाधान की क्षमता रखता हो, यही इस्लाम धर्म की विशेषता है।

कवीलाल जाबा

भारतीय पत्रकार और राजनीतिक नेता



उचित नेता

अगर कोई उचित नेता हो, जो इस्लाम के प्रति उचित बातें बतलाएँ तो इस्लाम धर्म के लिए फिर से यह संभव है कि वह इस संसार की महत्वपूर्ण शक्ति बनकर उभरे।

मौन्टगु मेरी वाई

ब्रिटीश प्राचये विद्या विशारद

यह कहना संभव नहीं है कि न्याय या उच्च चरित्र किसी समूह या समय के लिए उपयुक्त नहीं है। यह इस्लाम धर्म की विशेषता है। कुछ अन्य धर्मों में क्षेत्रिय, सांप्रदायिक या जातिवाद चरित्र साफ नज़र आता है। उदाहरण के रूप में यहूद है। जब वे अपने धर्म के अतिरिक्त किसी और धर्म का अनुपालन करने वाले से व्यवहार करते हैं, तो ईश्वर ने उनके चरित्र के बारे में यह विवरण किया है। और किताबवालों में कोई तो ऐसा है कि यदी तुम उसके पास धन-दौलत का एक ढेर भी अमानत रखदो तो वह उसे तुम्हें लौटा देगा। और उनमें कोई ऐसा है कि यदि तुम एक दीनार भी उसकी अमानत में रखो, तो जब तक कि तुम उसके सिर पर सवार न हो, वह उसे तुम्हें अदा नहीं करेगा। यह इसलिए कि वे कहते हैं, उन लोगों के विषय में जो किताबवाले नहीं हैं, हमारी कोई पकड़ नहीं। और वे जानते-बूझते अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। (आले-इमरान, 75)

बैबुल मत्ता

मुझे केवल इस्राईलियों के भटके हुए लोगों के लिये भेजा गया है। जब मैंने 12 समूहों को चयन किया, ताकि वे यहूदों का मार्गदर्शन करे, तो उन्हें यह आज्ञा दिया गया कि तुम पिछली खौमों के मार्ग पर ना चलो, न सामरियों के नगर में प्रवेश करो, बल्कि इस्राईलियों के भटके हुए लोगों के पास जाओ।



3. ज्ञान और पुनर्निर्माण की सभ्यता

मानव की ओर इस्लाम की दृष्टि यह है कि ईश्वर ने मानव को धरती पर उत्तरधिकार और पुनर्निर्माण के लिए पैदा किया है। ईश्वर ने कहा। उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया और उसमें तुम्हें बसाया। (हूद, 61)

ईश्वर ने कहा। वही तो है जिसने तुम्हें धरती में खलिफा बनाया। अब जो कोई इन्कार करेगा, उसके इन्कार का वबाल उसी पर है। इनकार करनेवालों का इनकार उनके रब के यहाँ प्रकोप ही को बढ़ाता है, और इनकार करनेवालों का इनकार केवल घाटे में ही अभिवृद्धी करता है। (फ़ातिर, 39)

विकास और पुनर्निर्माण

इस्लाम प्रतिभा और व्यक्तिगत उत्कृष्टता को मान्यता देता है। इस्लाम विकास और पुनर्निर्माण का धर्म है न कि तोड़ फोड़ का। उदाहरण: अगर कोई व्यक्ति एक ज़मीन का मालिक है, वह धनी भी है, उसको इस ज़मीन की खेती करने कि आवश्यकता नहीं है, और वह इस ज़मीन को वीरान छोड़ दिया है। ऐसी स्थिति में एक लम्बा समय बीत गया, तो इस्की यह ज़मीन अपने आप लोक संपत्ति बन जाती है, और इस्लामिक नियम यह निर्णय लेते हैं कि इस संपत्ति का अधिकार उस व्यक्ति को प्राप्त हो जायेगा, जो सबसे पहले इस ज़मीन की खेती कर सकता हो।

प्राध्यापक चार्लस एडवर्ड अर्ची पॉल्ड
ब्रिटीष राजनीतिक नेता



आत्मा की अनुशास्तिक

सारे धर्मों में इस्लाम विज्ञानिक खोजों से अधिक उपयुक्त है, आत्मा की अनुशास्ता, दया और न्याय के संदेश देने में इस्लाम सबसे महान धर्म है।

गोस्ताब लोबुन

फ्रेज इतिहास्कार

इस्लाम धर्म के अनुसार हर वह व्यक्ति पापी है, जो मानवता के लिए लाभदायक और धरती के पुनर्निर्माण का ज्ञान प्राप्त न करे। निस्संदेह मुहम्मद को उस समय भेजा गया, जब कि मानवता सांस्कृतिक और वैज्ञानिक मंदता में जीवन यापन कर रही थी। लोग दर्शन, बहस टकरार, धरती के विकास और पुनर्निर्माण के अवतलता में पड़े हुए थे। तो मुहम्मद ने मानवता को मुक्तता दिलायी, इस्लाम धर्म (ज्ञान, पुनर्निर्माण और सभ्यता पर आधारित धर्म) के द्वारा उसको सम्मानित बनाया। जिसमें धरती के विकास और आध्यात्मिक विचारों के बीच कोई विवाद नहीं है। मुस्लिम मनुष्य के भीतर प्रार्थना, पुनर्निर्माण के बीच और आध्यात्मिक जीवन, अपने ईश्वर की इच्छा के अनुसार अनुसरण करने के बीच कोई अंतर नहीं है। बल्कि यह सब ईश्वर के लिए और उसी के मार्ग में शुमार है। ईश्वर ने कहा। कहो, मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है।

(अल-अनआम, 161, 162)



सारे संसार के आमने सामने

आप सब जानते हैं कि मैं मूर्ती पूजा करने वाले महान राजनीतिक गांधी का पुत्र हूँ। मैं संसार के सामने मुसलमानों के इस सम्मेलन में यह एलान करता हूँ कि मैं निश्चय इस्लाम से प्रेम कर चुका हूँ, खुरआन पसंद कर चुका हूँ, एक ईश्वर पर, पवित्र रसूल मुहम्मद पर, उनके अंतिम नबी होने पर, उनके बाद किसी नबी ते न आने, खुरआन के लाये हुए संदेश को सत्य मानने, सारी पवित्र पुस्तकों को सही जानने और ईश्वर के रसूलों को सच्चा समझने पर विश्वास (ईमान) ला चुका हूँ। मैं खुरआन और इस्लाम के लिए ही जियूँगा, मरूँगा और उसी की रक्षा करूँगा। उसके लिए एक वाक्य स्वयं बनूँगा। उसी कि ओर निर्देश करूँगा और अपने परीवार, संसार के लोगों को बुलाऊँगा। यह सच्चा धर्म, ज्ञान, सभ्यता, न्याय, अमानतदारी, दया और संतुलन का धर्म है।


अब्दुल्ला हेराल गाँधी

महात्मा गाँधी का पुत्र

4. नैतिकता की सभ्यता

इस्लाम के अनुसार नैतिकता प्रार्थना है। बल्कि रसूल ने हमें यह सूचना दी है कि आपको भेजे जाने का लक्ष्य नैतिकता को पूर्ण करने में प्रकट होता है। आप ने कहा: मुझे उच्च नैतिकता को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है। (इस हदीस को इमाम मालिक ने वर्णन किया है) सभ्यता और प्रसन्नता का मार्ग नैतिकता का मार्ग है, जो उच्च चरित्र और अच्छे कार्य पर प्रेरणा देता है। इस्लाम के अनुसार नैतिकता जीवन के हर भाग में व्यापक है, जैसे मनुष्य का अपने स्वयं के साथ, अपने ईश्वर के साथ और अन्य लोगों के साथ व्यवहार है। इसी प्रकार मुस्लिम और काफिर के साथ, छोटे बड़े, पुरुष, स्त्री और मित्र शत्रु के साथ व्यवहार पर व्यापक है। व्यवहार, सत्यता, शर्म, मन की स्वच्छता, भलाई कि इच्छा और इसके अतिरिक्त सभी चीजों में इस्लाम ने दया, न्याय, उच्च चरित्र और वीरता के साथ व्यवहार करने का आदेश दिया है। ईश्वर ने न्याय महत्व और दुश्मनों के साथ भी आवश्यकता का विवरण करते हुए यह कहा। ऐ ईमान लानेवालों। अल्लाह के लिए गवाह होकर दृढ़तापूर्वक, इन्साफ की रक्षा करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ करना छोड़ दो। इन्साफ करो, यही धर्म परायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी खबर है। (अल-माइदा, 8)

ईश्वर ने अपने रसूल मुहम्मद के संदेश का विवरण करते हुए कहा कि यह संदेश सारे संसार के लिए दयालुता है। ना कि केवल उन लोगों के लिए जो इस पर ईमान लाये, ईश्वर ने यह कहा। हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)



नैतिकता इस्लामिक सभ्यता का अलग न होनेवाला अंग और मूल स्तंभ है। यह संभव नहीं है कि धरती के विकास या किसी और आवश्यकता के कारण मुस्लिम उच्च चरित्र से दूर रहे। निश्चय ईश्वर ने अपने रसूल मुहम्मद को अच्छी शिक्षा दी, ताकि वह हर विषय में उच्च चरित्र और नैतिकता का महान रूप हो। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है, अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। (अल-अहज़ाब, 21)

ईश्वर ने अपने रसूल को दयालु, प्रसन्नता के मार्ग की ओर लोगों को मार्गदर्शन करने पर आदर्शवान होने का विवरण करते हुए यह कहा। तुम्हारे पास तुम्ही में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। (अल-तौबा-128)

5. बुद्धिमत्ता और विचार की सभ्यता

इस्लाम धर्म में कोई ऐसी मिथ्या बातें नहीं हैं जिसके प्रति प्रश्न करना संभव ना हो। या कोई ऐसा रहस्य नहीं है जिसके प्रति विचार असंभव हो। बल्की ईश्वर ने अपनी निशानियों, जीव और सारे समूहों में विचार करने का आदेश दिया है। ईश्वर ने कहा। जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते हैं, और आकाशों और धरती की संरचना में साँच-विचार करते हैं। (वे पुकार उठते हैं) हमारे रब। तूने यह सब व्यर्थ नहीं बनाया है। महान है तू, अतः तू हमें आग की यातना से बचा ले। (आले-इमरान, 191)



ईश्वर ने कहा। इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल-खोल कर निशानियाँ बयान करते हैं जो साँच-विचार से काम लेना चाहें। (यूनुस, 24)

ईश्वर ने कहा। स्पष्ट प्रमाणों और ज़बूरों (किताबों) के साथ। और अब यह नसीहत तुम्हारी ओर हमने अवतरित की, ताकि तुम लोगों के समक्ष खोल-खोल कर बयान कर दो, जो कुछ उनकी ओर उतारा गया है, और ताकि वे साँच-विचार करें। (अल-नहल, 44)

ईश्वर ने कहा। क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया। अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत से लोग तो अपने प्रभु से मिलन का इन्कार करते हैं। (अल-रूम, 8)



ईश्वर ने कहा । ये मिसालें लोगों के लिए हम इसलिए पेश करते हैं कि वे सौंच-विचार करें। (अल-हश्र, 21)

बल्कि ईश्वर ने हमें यह सूचना दी कि ज्ञान केवल ख्यालों का नाम नहीं है। बल्कि उसका प्रमाणों पर आधारित होना ज़रूरी है। ईश्वर ने कहा। कहो, यदि तुम सच्चे हो तो अपने प्रमाण पेश करो। (अल-बकरा, 111)

इस्लाम धर्म में ऐसे कोई रहस्य नहीं है, जिसको कोई न जानता हो। या ऐसी कोई मिथ्या बातें नहीं हैं, जिसका कोई साधन प्राप्त ना कर सकता हो।

6. बाह्य और आंतरिक शांति कि सभ्यता

आंतरिक शांति यानी मानव की आंतरिक प्रसन्नता और आधुनिक सभ्यता में अधिकतर लोगों को भ्रम में रखनेवाले आंतरिक संघर्ष से मुक्ति दिलाना है। इस प्रकार कि मानवीय विचार में संसार और परलोक का जीवन शांति के साथ व्यतीत हो। प्रार्थना, कार्य और पुनर्निर्माण के कार्यान्वयन हो। आध्यात्मिक और भौतिक जीवन का संबंध हो, ज्ञान और धर्म का संगम हो। निश्चय इस्लामिक सभ्यता में आंतरिक शांति एकीकरण के सिद्धांत से निकलने वाला खुला संकेत है, जो मुस्लिम के मन में पैदा होनेवाली हर चीज़ को सरलता के साथ इकट्ठा करता है। इस्लाम धर्म में संसार स्वयं अपने आप कोई लक्ष्य नहीं है। बल्कि वह परलोक के लिए खेती और पुल के समान है। यह संदेश हमें ईश्वर कि इस वाणी में मिलता है । जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आखिरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (अल-कसस, 77)



बुद्धिमत्ता और तक्र

इस्लाम की अनोखी बात यह है कि वह बुद्धिमत्ता पर आधारित है। वह अपने भक्तों से देवत्व महात्वपूर्ण राज्य को कभी भी बेकार समझने का संदेश नहीं दिया। इसी प्रकार से इस्लाम खोज और ज्ञान पर आधारित प्रश्नों से लगाव रखता है और अपने भक्तों को आदेश देता है कि वे इस्लाम लाने से पहले सौंच-विचार और बुद्धि से काम लें। निश्चय इस्लाम सही बातों का सबूत तलाश करो और भलाई को चुनो, की बुद्धिमत्ता का पूरा समर्थन करता है, यह कोई नई बात नहीं है, इसलिए कि भलाई ईमान वालों के लिये उनकी अपनी खोई हुई चीज़ है, जहाँ भी वे उसे पालें वही उसका ज़्यादा अधिकार रखते हैं। इस्लाम बुद्धिमत्ता और तक्र का धर्म है, इसी कारण ईश्वर के नबी मुहम्मद पर आने वाला पहला संदेश "पढ़ो" है, इसी कारण ईमान लाने से पहले सौंच-विचार की ओर बुलाना इस्लाम का नारा है। इस्लाम सत्य है, उसका हत्यार ज्ञान है, और उसका गहरा दुश्मन अज्ञान है।

हारून ल्योन

ईश्वर की इस वाणी में भी मिलता है। फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह का उदार अनुग्रह (रोज़ी) तलाश करो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफल हो। (अल-जुमुआ, 10)

यानी जब नमाज़ पूरी हो जाये, तो अपने सांसारिक कार्य कि ओर निकल जाओ। शर्त यह है कि वह कार्य हलाल हो। आप इस कार्य में प्रेरणा के साथ ईश्वर कि इच्छा तलाश करते हुए लगे रहे। जैसा कि रसूल ने अपने एक साथी से कहा: आप ईश्वर की इच्छा कि तलाश के साथ जो कुछ भी धन खर्च करोगे आपको उस पर पुण्य मिलेगा, यहाँ तक कि वह खाना, जो आप अपनी पत्नी के मुँह में डालते हो। (इस हदीस को इमाम मालिक ने वर्णन किया) यानी आप अपनी पत्नी के मुँह में जो खाना (भोजन) डाल रहे हो उसपर भी आपको पुण्य मिलेगा। इस्लाम धर्म में संसार और परलोक के बीच कोई अंतर नहीं है। लेकिन शर्त यह है कि हम परलोक को छोड़कर केवल संसार में ही अपना मन लगा लें। जैसा कि ईश्वर ने कहा। ऐ ईमान लानेवालों। तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह कि याद से गाफिल न कर दें और न तुम्हारी सन्तान हो। जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहनेवाले हैं। (अल-मुनाफ़िकून, 9)

ईश्वर ने यह भी कहा। जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आखिरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है। (अल-कसस, 77)

कार्य के प्रति, पत्नी के प्रति प्रेम, और अपनी संतान के साथ खेल-कद और उनका ध्यान रखना, इसके अतिरिक्त अन्य चीज़ें शरिअत के सीमाओं के भीतर धर्म में और ईश्वर के रसूल की मार्गदर्शनी में व्यापक हैं। शर्त यह है कि इसका लक्ष्य ईश्वर की इच्छा है। ईश्वर ने कहा। कहो, मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है। (अल-अनआम, 162)

प्रभावपूर्ण समाधान

निश्चय खुरआन सारी आस्थि, समाजिक और चारीत्रिक समस्याओं का प्रभावित समाधान प्रस्तुत करता है, इसी कारण खुरआन की सत्यता पर संदेश करना असंभव है, क्यों कि मुहम्मद ईश्वर की ओर से मिले हुए संदेश को पहुँचाने में सफल हो गये। मेरे खयाल में हमारी जो भी धार्मिक स्थिती हो, हमें खुरआन को मक्का: मुकर्रमा: के जीवन में चारीत्रिक बुलंदी का संदेश समझना ज़रूरी है।

मॉन्टोगु मेरी वॉट

ब्रिटीश प्रचय विधीविचारक



सारा जीवन ईश्वर के लिए है। यहाँ तक कि जब आशय साफ हो, तो शारीरिक आवश्यकताएँ को पूरा करना भी ईश्वर का अनुपालन करने के समान है।

बाह्य शांति बन्धुओं और अजनबियों के साथ, मित्र और शत्रु के साथ (अच्छा व्यवहार है) बल्कि मुस्लिम का अपने किसी भाई के लिए सबसे पहला अभिवादन यह है: अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु (तुम पर ईश्वर द्वारा शांति और दया हो) सारे धर्म सुरक्षित और प्रसन्न नहीं रहे, जिस प्रकार कि इस्लामिक शासन में प्रसन्न थे। कुछ मुसलमानों के अधः पतन के कारण संसार को कितना अधिक घाटा हुआ। ईश्वर ने कहा। ऐसा ना हो कि एक गिरोह कि शत्रुता, जिसने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लगो। हक़ अदा करने और ईश-भय के काम में तुम एक-दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग ना करो। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देनेवाला है। (अल-माइदा, 2)



सुखी जीवन

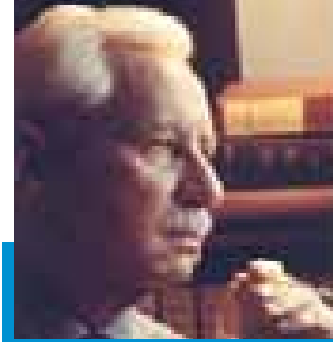
अगर हम इस्लाम के प्रती नियमित व्यवहार करना चाहें, तो इस्लाम की शिक्षाओं का प्रभावी शक्ति और भलाई पर आधारित होने से सहमत होना हमारे लिये ज़रूरी है। इस शक्ति की शिक्षाओं के अनुसार जीवन का सुखी होना संभव है, जिस में चारीत्रिक रूप से कोई कमी नहीं रहती। यह शिक्षायें ईश्वर की सारी प्रजा के साथ दयालुता, लोगों के आपसी संबंधों में अमानतदारी, प्रेम और दूसरों की आवश्यकताओं को महत्व देने की वृत्ति पैदा करती है। इसी प्रकार इस्लामिक शिक्षायें हर अच्छे कार्य की ओर बुलाती हैं। इन शिक्षाओं के प्रमाण में नेक मुसलमान चारीत्रिक नियमों के अनुसार जीवन बिताता है।

गोल्ड टेसीहर

यहूदी प्रचय विधि विचारक

7. पवित्रता और प्रेम की सभ्यता

इस्लामिक सभ्यता अपने अनुयायियों पर यह अधिरोपण करती है कि वे पवित्र मन और साफ दिल वाले हो। ईश्वर ने मुस्लिमों की प्रार्थना का विवरण करते हुए यह कहा। और (इस माल में उनका भी हिस्सा है) जो उनके बाद आए, वे कहते हैं, ऐ हमारे रब। हमें क्षमा कर दे और हमारे उन भाइयों को भी जो ईमान लाने में हमसे अग्रसर रहे और हमारे दिलों में ईमानवालों के लिए कोई विद्वेष न रख। ऐ हमारे रब। तू निश्चय ही बड़ा करुणामय, अत्यन्त दयावान है। (अल-हश्र, 10)



महान लोगों के चरित्र

निस्संदेह मुसलमान, इसाइयों से उच्च चरित्र वाले थे, इसी प्रकार वे अपने इतिहास की अधिक पंजिकृति करने वाले और असहायों की अधिक सहायता करने वाले थे। अपने इतिहास में मुसलमानों ने बहुत ही कम निर्दयता का व्यवहार किया है। जिस प्रकार इसाइयों ने वर्ष 1099 में जेरूसलाम पर विजेता प्राप्त करने के बाद किया था।

वीलडुरांट

तुम आपस में सलाम को फैलाओ। (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने वर्णन किया है) ईश्वर के रसूल से यह प्रश्न किया गया है कि लोगों में सबसे अधिक सर्वश्रेष्ठ कौन है। आप ने कहा हर वह व्यक्ति जिसका मन पवित्र हो और ज़बान सच्ची हो। लोगों ने कहा: सच्ची ज़बान वाले को तो हम जानते हैं, लेकिन यह पवित्र मन वाला कौन है। आप ने कहा: धर्मपरायणता और उच्च नैतिकता रखनेवाला वह व्यक्ति है जिसके मन में न पाप है, न अन्याय है, न घृणा और न जलन है। (इस हदीस को इब्ने माज़: ने वर्णन किया है)

8. आध्यात्मिक व भौतिक सभ्यता

इस्लामिक सभ्यता आध्यात्मिक विचार लेकर आयी। साथ-साथ उसने भौतिकवाद को नहीं भूला और न छोड़ा। निश्चय ही ईश्वर ने मानव को आत्मा और भौतिक सामाग्री से पैदा किया। मानव के जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों भागों के लिए हर तरह के साधन से सहायता की। किन्तु शरीर के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया जिसमें वह धरती पर रहता है। इसी प्रकार ईश्वर ने आध्यात्मिक भाग के लिए आकाशीय प्रकाशना मानव के लिए अपने रसूलों द्वारा अवतरित की, ईश्वर ने आत्मा और भौतिक सामाग्री से मानव कि सृष्टी के बारे

आध्यात्मिक सुख

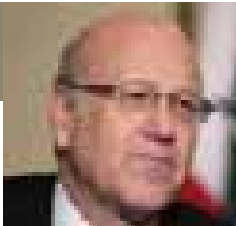


डेल कर्नेजी

अमेरिकन लेखक

मेरे अनुभव से अब महत्वपूर्ण बात यह है कि धर्म की क्या क्या अनुग्रहों मुझ पर हैं। जिस प्रकार से कि बिजली, भोजन और साफ जल की अनुग्रहें मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं। यह अनुग्रहें हमारे सुख जीवन के लिए सहायक हैं, लेकिन धर्म इन से अधिक कई ज्यादा अनुग्रह हम पर करता है। निश्चय धर्म आध्यात्मिक सुख का मददगार है, या वह (विलियम जेम्स के अनुसार) बुलंद होस्ले के साथ जीवन बिताने में सहायक है, वह जीवन जो सुख प्रसन्नता और संतुष्ट पर आधारित होता है। धर्म हमारे लिये विश्वास, आशा और साहस का मददगार है, धर्म मुझ से डर, चिंता और परेशानी दूर करता है। मुझे धर्म जीवन के लक्ष्यों से परिचय कराता है। मेरे सामने सुख की संभावना का मार्ग खोल देता है और हमारे जीवन के रेगिस्तान के बीच हरा भरा घर बनाने पर मेरी सहायता करता है।

इस्लाम की महानता



हमारे खलम चाहे कितना ही वाग्मिता रखते हों, फिर भी इस्लाम को इनकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन हमारे खलमों को इस्लाम की आवश्यकता है। क्योंकि इस्लाम आध्यात्मिक और चारीत्रिक विषयों पर आधारित है। इस्लाम में वह चमत्कारी खुरआन भी है, जिस से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

में यह कहा। याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिशतों से कहा, मैं सड़े हुए गार की खनखनाती हुई मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ। तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना। (अल-हिज़्र, 28, 29)

आत्मा और शरीर दोनों मिलीझुली चीज़ें हैं, जो एक दूसरे से मृत्यु तक भिन्न नहीं होती। इनमें से हर एक कि अपनी-अपनी आवश्यकताएँ हैं। शरीर खाना-पानी और वस्त्र की आवश्यकता रखता है। अगर किसी एक भाग में कमी हो तो सारा शरीर इससे प्रभावित हो जाता है। अगर मानव भोजन में कमी करें तो आप उसको कमज़ोर व निर्बल पायेंगे जो सुखी जीवन बिताने से असहाय होगा। यही हाल खाने और पीने का भी है।

शरीर कि आवश्यकताओं में से किसी एक में भी कमी का प्रभाव सारे शरीर पर होगा, जिससे मानव जीवन-यापन करने से निर्बल होगा, और शरीर के दूसरे भाग सुखी जीवन-यापन करने में सहायक न होंगे। आत्मा की भी कुछ आवश्यकताएँ हैं। आत्मा प्रेम, दया, त्याग के बिना जीवित नहीं रह सकती। आत्मा उस ईश्वर को प्राप्त किये बगैर कैसे आश्रय में आये। मानव जब अपनी आत्मा की आवश्यकताएँ पूरी करने में कमी करे, तो वह बिल्कुल उस मानव के समान है जो खाने-पीने में कमी करता हो। मानव को कैसे सुख मिलेगा और कैसे उसकी स्थिति सुधर जायेगी, जबकि उसका दूसरा



भाग(आत्मा) घायलों से पीडित हो। अफसोस की बात है कि पश्चिमी सभ्यता आत्मा का सुख भूल गयी। इसी कारण वह संपूर्ण सुविधाओं के होते हुए भी इस संसार में सुखी नहीं है। आधुनिक सभ्यता शरीर और भौतिकवाद की सेवा के लिए सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन वह यह भूल गयी, या भूलना चाहती है कि आत्मा के बिना शरीर को प्रसन्नता, सफलता और सुख, बल्कि वास्तविक रूप से सभ्यता भी उपलब्ध नहीं है।

9. मानव और उसके अधिकारों का ध्यान रखनेवाली सभ्यता।

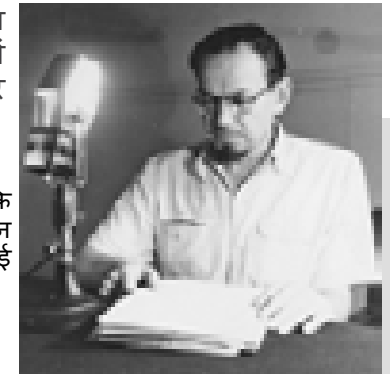
यह बात ज्ञात है कि मानवीय अधिकारों का उपयुक्त होना किसी भी देश के नियम और अपने वासियों के अधिकारों की सुरक्षा व स्वतंत्रता का ध्यान रखने का ज्ञान प्राप्त करने में मानक है। इसी प्रकार अधिकारों का उपयुक्त होना वासियों कि जागरूकता और

दोश हमारा है

हमारे लिए इस बात का साफ़ । होजाना जरूरी है कि मुसलमानों की लापरवाही ही वर्तमान काल में विघटन का कारण है। क्यों कि इस्लामिक शिक्षाओं का कोई दोष नहीं है।

योबून्ड फ़ायिज़

ऑस्ट्रियी आलोचक



इन अधिकारों से लाभ उठाने कि सीमा के लिए भी मानक है। बल्कि लोकतंत्र प्रणाली का सब से महत्वपूर्ण भाग मानवीय अधिकार का ध्यान रखना है।

इस्लामिक सभ्यता ने मानवीय अधिकार के प्रति वास्तविक रूप में एक अनोखा नमूना पेश किया है। यही इस्लामिक सभ्यता की महानता है कि वह केवल निनाद (नारा) नहीं है। इसी कारण इस्लाम में सब से अधिक मानवीय अधिकारों को सर्वश्रेष्ठ बनानेवाली कुछ चीज़ें वह है, जो निम्न लिखित हैं।

1. इन अधिकारों का स्रोत इस बात पर आधारित है कि सरदारी और संप्रभुता ईश्वर के लिए है। ईश्वर ने कहा। निर्णय का सारा अधिकार अल्लाह ही को है, वही सच्ची बात बयान करता है और वही सबसे अच्छा निर्णायक है। (अल-अनआम, 57)

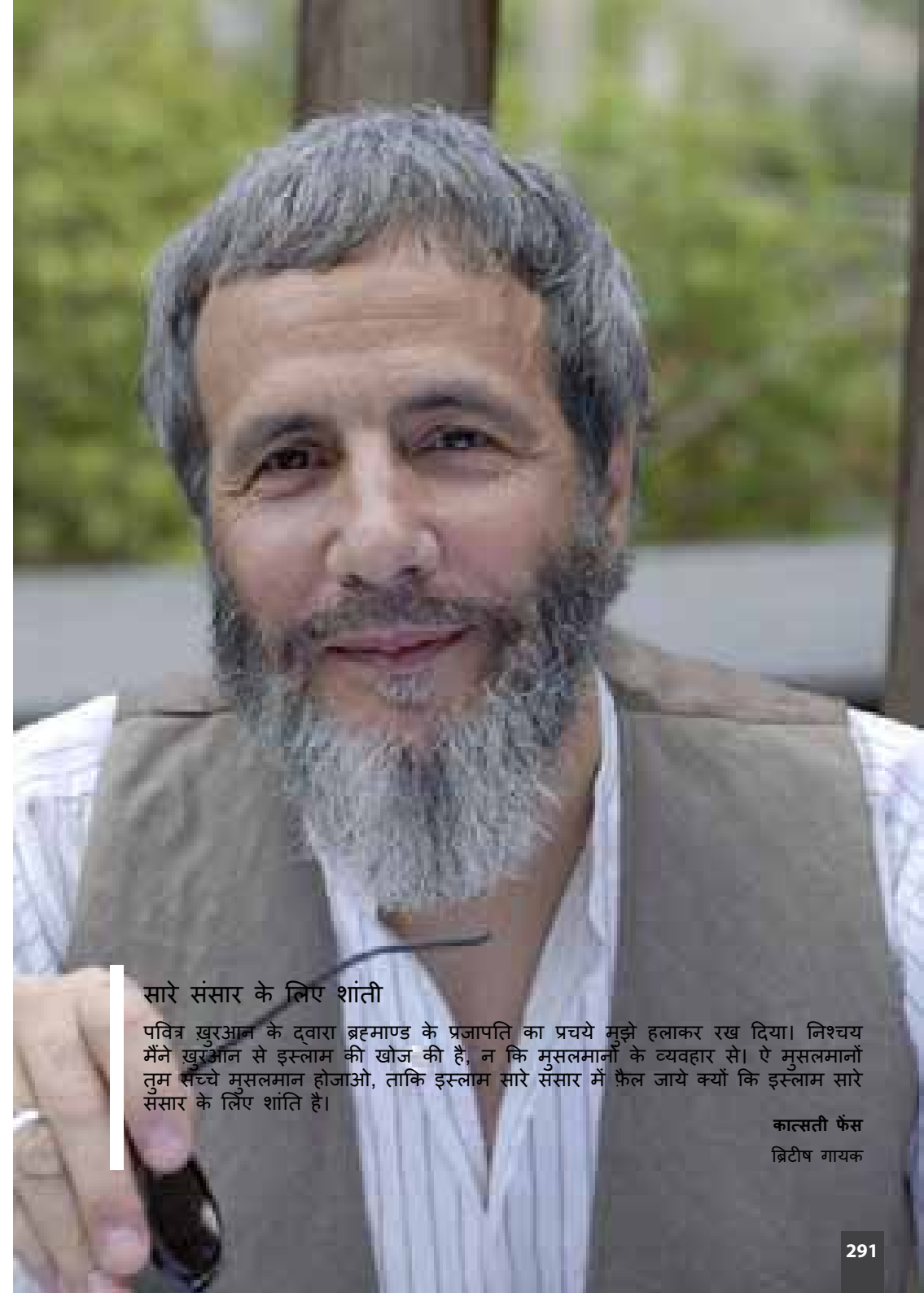
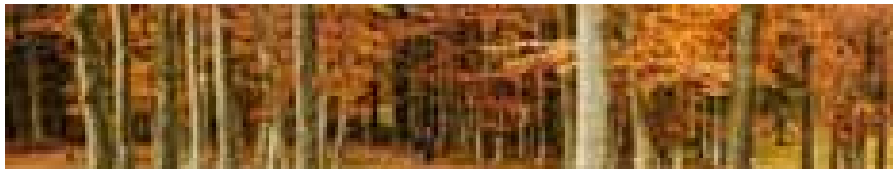
जिस प्रकार जीव की ओर देवत्व दृष्टि है, उसी प्रकार अधिकार की ओर इस्लामिक नियम दृष्टि रखता है और लाभ दायक चीज़ों का ध्यान रखता है।

2. स्थिरता: समय के बदलने से और परिस्थितियों में परिवर्तन से यह अधिकार नहीं बदलते।

3. परोपकार के स्थान से अधिकारों के निकलने ध्यान रखना: इस्लाम में अधिकार उस स्थान से निकलते हैं, जिसमें कि भक्त ईश्वर के डर के सामने होता है। यह वह स्थान है जिसके प्रती रसूल ने यह कहा: तुम ईश्वर की इस प्रकार से प्रार्थना करो कि तुम उसको देख रहे हो। अगर तुम उसको देख ना पाओ, निस्संदेह वह तो तुम्हें देख रहा है। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।

4. मानवीय अधिकार इस धर्म की प्रकृति के बीच पूर्ण रूप से एकता: इस्लाम ने अधिकारों को ऐसे ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि इस्लामिक नियम और लक्ष्य ने सीमाओं में इनको सीमित रखा। उच्च चरित्र और नैतिकता से संबंधित रखा। इन चरित्र का उल्लंघन अधिकार का उल्लंघन माना। अंत में इनको धर्म से जोड़ा और इनका स्रोत देवत्व जाना। इसी कारण मुस्लिम व्यक्ति पर यह चीज़ें अधिरापण है ना कि केवल अधिकार। इस्लाम में अधिकारों को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा गया, जो इस धर्म कि देवत्व प्रकृति के अनुसार है।

5. इस्लाम में मानवीय अधिकार इस बात पर आधारित है कि मानवीय समाज की संप्रभुता, मानवीय व्यक्तियों के संप्रभुता की शाखा है, ना कि इसका विपरीत है। जैसा कि संसारिक नियमों की स्थिति है। ईश्वर ने कहा।



सारे संसार के लिए शांती

पवित्र खुरआन के द्वारा ब्रह्माण्ड के प्रजापति का प्रचये मुझे हलाकर रख दिया। निश्चय मैंने खुरआन से इस्लाम की खोज की है, न कि मुसलमानों के व्यवहार से। ऐ मुसलमानों तुम सच्चे मुसलमान होजाओ, ताकि इस्लाम सारे संसार में फैल जाये क्योंकि इस्लाम सारे संसार के लिए शांति है।

कात्सती फेंस
ब्रिटीष गायक

इसी कारण हमने इसराईल की संतान के लिए यह अध्यादेश पारित कर दिया गया था जिसका उन्हें ध्यान रखना है कि किसी व्यक्ति को किसी के खून का बदला लेने या धरती में फ़साद फैलाने के अतिरिक्त किसी और कारण से मार डाला तो मानो उसने सारे ही इन्सानों की हत्या कर डाली। और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, मानो सारे इन्सानों को उसने जीवन दान किया। उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत-से लोग धरती में ज़्यादातीयाँ करनेवाले ही हैं। (अल-माइदा, 32)

6. इस्लाम धर्म दूसरे अन्य धर्म के मुकाबले बहुत समय पहले मानवीय अधिकारों का विवरण करता है: इस्लाम धर्म ने मानव के लिए जिन अधिकारों की ज़मानत दी है। उनमें आज तक बौद्धिक संघर्ष या क्रांती और दावेदारी नहीं हुई, जिस प्रकार कि लोकतंत्र और उसके विकास के कारणों के भीतर मानवीय अधिकारों के इतिहास कि परिस्थिती है। जैसा कि फ्रांस, अमेरिका और अन्य देशों का हाल है। निश्चय मानवीय अधिकार के नियम और आदेश ईश्वर द्वारा प्रकाशन हुए हैं। इन अधिकारों की ओर पहले से न कोई विचार हुआ था, न उसकी आकांक्षा किसी मन में थी, और न इनको प्राप्त करने में कोई संघर्ष हुआ था।
7. यह अधिकार वास्तविक है। जीवन से संबंधित है। और मानवीय आवश्यकताओं को पूर्ती करनेवाले हैं। उन अधिकारों के विपरीत जो अन्य धार्मिक नियमों में हैं। वे सब दर्शन के रंग से रंगे हुए हैं।
8. कुछ वह बातें जिससे इस्लामिक नियम मानवीय अधिकार के प्रती विशेषता रखते हैं। इनमें सबसे सर्वश्रेष्ठ अधिकार यह हैं: माता-पिता और बन्धुओं का अधिकार, संतान पर, रिश्तेदारी के अधिकार, भ्रूण के अधिकार, धार्मिक और सांसारिक शिक्षा में प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार। वैध आय और ब्याज़ से रुकने का अधिकार, भलाई की ओर बुलाने का, अच्छाई का आदेश देने और बुराई से रोकने का अधिकार है।
9. मानवीय अधिकारों के मुद्दे में वास्तविक रूप से इस्लामिक नियम अन्य नियमों के विपरीत मानवीय सम्मान और ईश्वर पर विश्वास की भावनाओं को प्रोत्साहित करने पर आधारित है। और सांसारिक जीवन में पूर्ण रूप से अनुरूपता के अनुसार मानवीय लाभ के लिए ब्रह्माण्ड की हर चीज़ को ईश्वर द्वारा मानव के लिए अनुयायी बनाने की परिभाषा पर आधारित है। इस्लाम को इस बात से की चिंता नहीं थी कि इतिहास में किसी भी समय ऐसी सभ्यता प्रकट नहीं हुई जो (निहित) स्वार्थ से दूर होकर मानवीय अधिकार को उपयुक्त बनाती है। वरना कितने ऐसे नारे हैं, जिनसे आवाज़ें बुलन्द होती हैं और बैनर लगाये जाते हैं। लेकिन जब इन नारों को बुलन्द करनेवाले संदेह के स्तर निकट हो, तो इन की



आइ में उनकी छुपी हुई आशय का प्रकट हो जाना बहुत कठिन है।

इस्लाम के रसूल मुहम्मद के प्रवेश होने के बाद मानवता को सामान्य रूप से सभ्यता उपलब्ध हुई। फिर भी कुछ लोग मुसलमानों की प्रस्तुत परिस्थिती और उनके निम्न वर्ग होने के कारण के प्रति प्रश्न करते हैं, हालांकि इस्लाम ने उनके लिए उच्च सभ्यता प्रदान की है। लेकिन यह आश्चर्य जनक प्रश्न उस समय दूर हो जाता है, जब हमें यह ज्ञान हो जाये कि मुसलमानों की प्रस्तुत परिस्थिती उनके धर्म कि वास्तविक रूप से प्रतिनिधी नहीं करती है। अधिकतर मुस्लिम जब अपने धर्म, अपनी पुस्तक और अपनी रसूल की वाणी में वर्णन किये हुए नियमों से दूर हो गये, तो वे मंदता से पीड़ित हो गये। वरना तो यह संसार सारी मानवता के लिए इस्लामी सभ्यता से अधिकतर किसी अन्य सभ्यता को प्रसन्न नहीं देखा है। इतिहास के चरित्र पढ़ना और लेखकों की बातें सुनना, (यहाँ तक कि वह लेखक जो मुसलमान नहीं है) इस विषय को जानने के लिए काफी है कि मुसलमानों के अधः पतन से संसार का कितना नष्ट हुआ है।



मुसलमानों के लिए यह संभव है कि वे संसार में अपनी सभ्यता उसी गती से फ़ैला सकें, जिस गती से वे पूर्व काल में फ़ैलाए। शर्त ये है वे अपने पूर्व चरित्र की ओस लौट आयें। इसलिए कि यह निपूर्ण संसार उनकी सभ्यता कि शक्ती के सामने खड़े होने की क्षमता नहीं रखता है।

खुरआन और हदीस का चमत्कार

हर रसूल के लिए कुछ निशानियाँ होती हैं, जो उसके सच्चे नबी और रसूल होने का प्रमाण हैं। उदाहरण के रूप में मुसा कि निशानी उनकी लाठी थी। ईसा की निशानी यह थी कि वह जन्मांध, कोड़ी को स्वस्थ करदेते थे, और मृत्यु को ईशवर के आदेश से जीवित करदेते थे। नबी और रसूलों के समापक (मुहम्मद) कि निशानी, मानवता के शेष रहने तक हर समय और स्थान के लिए उपयुक्त होने के अनुसार यह खुरआन है। खुरआन मार्गदर्शक पुस्तक है, इसी प्रकार से वह हर विषय में चमत्कार है। खुरआन का चमत्कार होना पूर्वकाल से लेकर आज तक उसके सन्देश, और रसूल के सच्चे होने का सबूत है। इसी तरह इस बात का भी प्रमाण है कि यह पुस्तक प्रजापति अमर प्रभु की ओर से अवतरित की गयी है। इसको नबी और रसूलों के साथ भेजा गया है, जो हर समय और स्थान के लिये उपयुक्त है। उपयुक्त जिन कारणों का विवरण किया गया, इसके साथ-साथ खुरआन का चमत्कार यह भी है कि वह अपनी वैज्ञानिक सूचनाओं में भी अद्भुत हैं। जैसा कि प्रकृतिक ज्ञान के रहस्य के प्रति खुरआन कि विवरण की हुई बातों में समाकालिन शोधकर्ता के प्रयासों से मालूम होता है। जब कि इस प्रकृतिक ज्ञान की खोज वर्तमान काल में ही हुई है। उदाहरण के रूप में मानव की सृष्टि और भ्रूण के प्रति संपूर्ण रूप से मानवता को ज्ञान प्राप्त होने से कई वर्षों पहले विवरण हुआ है। ईशवर ने कहा। हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया। फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठहरने की जगह टपकी हुई बूँद बनाकर रखा। फिर हमने उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया, फिर हमने उस लोथड़े को बोटी का रूप दिया, फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाई, फिर हमने उन हड्डियों पर माँस चढ़ाया, फिर हमने उसे एक दूसरा ही सृजन रूप देकर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकतवाला है अल्लाह, सब से उत्तम स्पष्ट। (अल-मोमिन्न, 12-14)

ईशवर ने कहा। वह तुम्हारी माँओं के पेटों में तीन अँधेरों के भीतर तुम्हें एक सृजन रूप के पश्चात अन्य एक सृजनरूप देता चला जाता है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। फिर तुम कहाँ फिर जाते हो। (अल-जुमर, 6)

जब वैद्य (डॉक्टर) अपने संदर्भों और खोज की ओर देखें, तो बिल्कुल उसी प्रकार पाया, जिस प्रकार कि खबर रखने वाला ज्ञाता ईशवर ने विवरण किया। इसके साथ साथ खुरआन ने शरीर में ज्ञानेन्द्रिय स्थान का वर्णन किया। ईशवर ने कहा। जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खाले जाएँगी तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मजा चखते ही रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है। (अल-निसा, 56)

खुरआन ने आकाश को विशाल होने का वर्णन किया। ईशवर ने कहा। आकाश को हमने अपने हाथ के बल से बनाया और हम बड़ी समाई रखनेवाले हैं। (अल-ज़ारियात, 47)

सूर्य को अपने ठिकाने में चलते रहने का खुरआन में विवरण हुआ है। ईशवर ने कहा। और एक निशानी उनके लिए रात है। हम उसपर से दिन को खींच लेते हैं। फिर क्या देखते हैं कि वे अंधेरे में रह गये। और सूर्य अपने नियत ठिकाने के लिए चला जा रहा है। यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली, ज्ञानवान का। (या-सीन, 37-38)

रसूल की वाणी (हदीस) भी इस चमत्कार से कुछे दूर नहीं है। माँ आइशा कहती है कि रसूल ने कहा: आदम की संतान के हर मानव कि 360 जोड़ों पर सृष्टि हुई है। जिसने ईशवर की महत्ता की, प्रशंसा की, ईशवर के एक होने की गवाही दी। ईशवर कि कृतज्ञता की, उससे



भ्रूण का विवरण

मुझे इस बात को स्वीकार करने में दुविधा नहीं होती है कि खुरआन ईशवर की वाणी है। क्यों कि खुरआन ने भ्रूण के बारे में जो विवरण किया है, उनको सातवीं सदी कि विज्ञानिक खोज पर आधारित करना संभव नहीं है। एक ही उचित परिणाम यह है कि ये विवरण ईशवर द्वारा मुहम्मद की ओर वही (रहस्योद्घाटन) हुई हैं।

प्रोफेसर यो शेवदी कोज़ान

टोकियोवैद्यशाला का डैरेक्टर

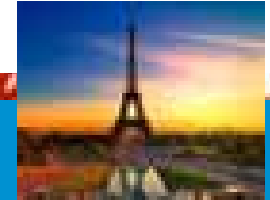
मुक्ती चाही, रास्ते से पत्थार, काँटा या हड्डी हटायी, अच्छाई का आदेश दिया या बुराई से रोका। (ईश्वर के रसूल ने इसी प्रकार से 360 जोड़ों की संख्या बतायी) तो वह उस दिन स्वयं को नरक से दूर करलिया। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है)

वैज्ञानिक रूप से यह बात प्रमाणित है कि मानवीय शरीर में इन जोड़ों के बिना मानव के लिए सांसारिक जीवन से प्रसन्न होना संभव नहीं है। न धरती में अपने उत्तराधिकार होने के कर्तव्य वह पूरा कर सकता है। इसी कारण मनुष्य पर यह अधिरोपण है कि वह हर दिन ईश्वर की इस अनुग्रह का आभारी रहे, जो जीव के हर विषय में उसकी महान कला का प्रमाण है। रसूल की इस वाणी में अद्भुत बात यह है कि आपने ऐसे समय में मानवीय शरीर के जोड़ों की संख्या का विवरण किया, जबकि किसी को इसके बारे में थोडासा ज्ञान भी प्राप्त नहीं था। और आज कि इक्कीसवीं शताब्दी में भी अधिकतर लोग नहीं जानते। बल्कि कई वैद्य शिक्षक भी इस बात से अज्ञानी हैं। यहाँ तक कि कुछ समय पहले मानवीय शरीर के जोड़ों की संख्या बिल्कुल उसी समान बतायी गयी, जिस समान के मुहम्मद ने चौदाह सौ वर्ष पहले बताया था। इनमे से 147 जोड़ रीढ़ की हड्डी में 24 जोड़ छाती में, 86 जोड़ शरीर के ऊपरी आधे भाग में, 88 जोड़ शरीर के निचले आधे भाग में और 15 जोड़ कमर में हैं।

स्वयं यह प्रश्न उठता है: प्रजापति ईश्वर के अतिरिक्त कौन है जिसने नबी और रसूलों के समापक मुहम्मद को यह विशेष वैज्ञानिक ज्ञान कि शिक्षा दी, जिसको मानवीय ज्ञान ने अभी बीसवीं शताब्दी के अंत में प्राप्त किया है।

कौन है जिसने मुहम्मद मुस्तफा को इस जैसी अनदेखी चीज़ों कि ओर बुलाया। अगर ईश्वर को अपने महान ज्ञान के द्वारा यह पता न होता कि किसी न किसी दिन मानव शारीरिक तथ्य तक पहुँच जायेगा। तो रसूल की इस वाणी में स्थिर प्रकाशवान इस समापक रसूल कि ईश देवत्व का सत्य प्रमाण है। इसी प्रकार रसूल के आकाशीय प्रकाशन से सच्चे जोड़ का सबूत है।

जब तक ज्ञान और सभ्यता का मार्ग उच्च चरित्र और नैतिकता की ओर ले जानेवाला न हो, तो वह सभ्यता विनाश करनेवाली है, और वह ज्ञान अप्रसन्नता और नष्ट का कारण है, ना कि मानवता की सेवा और उन्हें प्रसन्न बनाने का कारण। इसी कारण ज्ञान और सभ्यता का मार्ग ही नैतिकता का मार्ग भी है। जिस प्रकार ज्ञान और सभ्यता के बिना नैतिकता का मार्ग केवल एक मिथक और ख्याल है, इसी प्रकार नैतिकता के बिना सभ्यता और ज्ञान का मार्ग प्रत्येक व्यक्ति, समाज, समूह और मानवता के लिए विनाशक है।



अनपढ रसूल

निस्संदेह बुद्धी इस विषय से परेशान रहजाती है कि एक अनपढ व्यक्ति से कैसे खुरआन की यह आयतें (वाक्य) निकालना संभव है। पश्चिम के सारे लोगों ने यह माना है कि यह सारे वाक्य ऐसे हैं, जिन के शब्द और अर्थ के समान मानवीय बुद्धी लाने से असहाय है।

हेनी डीकॉस्ट्री

फ्रेंच सेना का पूर्व कर्नल

ब्रह्माण्ड के चमत्कार

अनपढ मुहम्मद (जिनका पालन पोषण अज्ञानी सभ्यता में हुआ है) से कैसे संभव हुआ कि वह ब्रह्माण्ड के उन चमत्कारों का परिचय कराये, जिनका खुरआन में वर्णन किया है, और जिन कि आधुनिक ज्ञान आज तक खोज में लगा हुआ है। फिर तो आवश्यक यह बात है कि खुरआन देवत्व वाणी है।

डिपोरा पटर

अमेरिकन पत्रकार

